गुरुभक्ति कथामृत विशेषांक

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०२३
वर्ष : ३३ अंक : १ (निरंतर अंक : ३६७)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

सद्गुरु के प्रति समर्पण अथाह, बने शाहों के शाह !

९

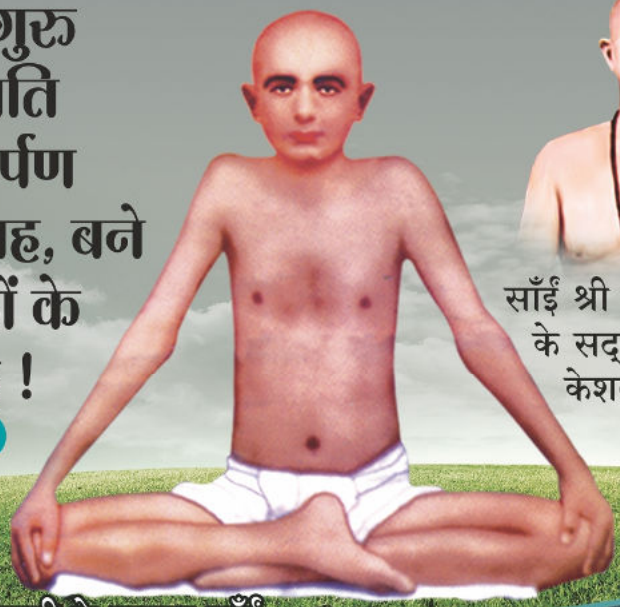

पूज्य बापूजी के सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी

साँईं श्री लीलाशाहजी के सद्गुरु स्वामी केशवानंदजी

लीलाशाहजी के अत्यंत परिपक्व वैराग्य व दृढ़ गुरुभक्ति ने केवल २० वर्ष की आयु में ही उन्हें सद्गुरु की पूर्ण कृपा का अनुभव करा दिया । उन्हींका कृपा-प्रसाद पूज्य बापूजी के माध्यम से आज विश्व के करोड़ों लोगों में बँट रहा है ।

पूज्य बापूजी की गुरुभक्ति, गुरुप्रेम, समर्पण, तितिक्षा, आज्ञापालन में दृढ़ता आज करोड़ों लोगों के लिए प्रेरक बनी हुई है ।

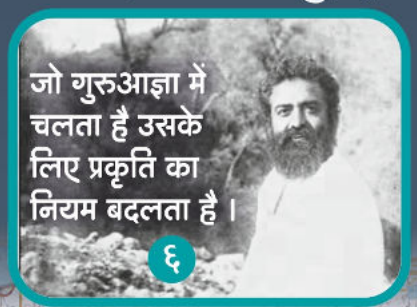

जो गुरुआज्ञा में चलता है उसके लिए प्रकृति का नियम बदलता है ।

६

दूरी को हर लेती है श्रद्धा ११

गुरुपूनम पर साधकों के लिए नया पाठ ४

हारकर पायी बड़ी जीत २८

आयु, आरोग्य व पुण्य प्रदाता मास १४

स्वास्थ्य में चार चाँद लगानेवाला अमृत समान जल ३२

वर्षा ऋतु में विशेष लाभकारी... ३४

पारिवारिक शांति हेतु करें यह प्रयोग सदा के लिए अन्न की कमी मिटाने हेतु

व्यवसाय में सफलता हेतु इससे मनोरथ सफल होते हैं

पढ़ें पृष्ठ १० व ३४

पावन महाप्रसाद पाने का सुदुर्लभ अवसर !

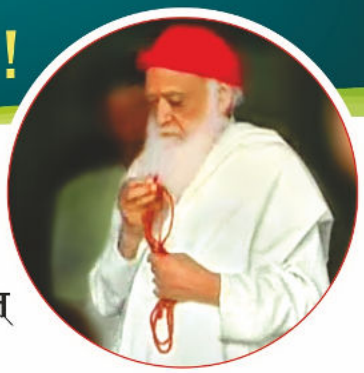

पद्म पुराण के अनुसार रुद्राक्ष तीर्थों में महान तीर्थ के समान है। ऐसे रुद्राक्ष को यदि ब्रह्मवेत्ता संत पूज्य बापूजी का पावन स्पर्श मिल जाय तो वह चिंतामणि से भी अधिक फलप्रद होगा अर्थात् मनोकामनापूर्ति के साथ इच्छा किये बिना ही अनेक लाभ देगा।

इसे पहनकर जो भी शुभ कर्म किये जाते हैं वे अनेक गुना फल देते हैं। यह दीर्घायु व शांति दायक, स्मरणशक्तिवर्धक, पाप, वात-कफ, हृदयरोग, कब्ज व शरीर की अनावश्यक गर्मी नाशक, भूत-प्रेत तथा अकाल मृत्यु से रक्षक है। गले में पहनने पर भाग्योदय व रोगनाश होता है। बाँह में पहनने पर विजय व शौर्य तथा कलाई में पहनने पर कार्य-साफल्य व बौद्धिक कुशाग्रता दायक है। इसे पूजा के स्थान पर भी रखते हैं।

इससे लाभान्वित कुछ सौभाग्यशालियों के अनुभव :

पिकनिक हेतु विद्यार्थी ले जाने पर एक बच्चा नदी में डूबने लगा तो मैं तैरना बिल्कुल न जानते हुए भी पानी में कूद गयी। बायाँ हाथ लगते ही बच्चा और नीचे चला गया। वह ऊपर आया तो कलाई पर रुद्राक्ष बँधे दायें हाथ से पकड़ लिया। उसके बाद मैं और बच्चा करिश्माई ढंग से घाट पर पहुँचे। - सुषमा गुप्ता

सचल दूरभाष : ६३५४३३५१६६

मैं ज्यादा मालाएँ करती तो हाथ-पैर जलते व चक्कर आते थे। पूज्य बापूजी द्वारा स्पर्शित करमाला के प्रभाव से यह सब नियंत्रित हो गया व मंत्रजप में विशेष रस आने लगा। - पूनम शर्मा

सचल दूरभाष : ९५११७२७६०५

यह महाप्रसाद पाने के सुअवसर का लाभ आप भी उठायें !

कैसे पायें यह लाभ : (१) ऋषि प्रसाद या ऋषि दर्शन के २५ सदस्य बनाने पर १ रुद्राक्ष माला (२७ मनकेवाली), ५० सदस्य पर ऐसी २ रुद्राक्ष मालाएँ व १०० सदस्य बनाने पर १ रुद्राक्ष माला (१०८ मनकेवाली) प्रसादस्वरूप भेंट में दी जायेंगी। (२) ऋषि प्रसाद की आजीवन (१२ वर्ष की) सदस्यता पर पूज्यश्री से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका (रक्षासूत्र) व ऋषि दर्शन की १ वर्ष की सदस्यता भेंटस्वरूप दिये जायेंगे।

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क : नजदीकी ऋषि प्रसाद कार्यालय अथवा ऋषि प्रसाद मुख्यालय, अहमदाबाद, दूरभाष : (०७९) ६१२१०७१४

प्रसादरूप में रुद्राक्ष मालाएँ व मनके पाते हुए कुछ पुण्यात्मा :

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु देखें : rishiprasad.org/rudraksha या स्कैन करें :

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३३ अंक : १ मूल्य : ₹ ७
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३६७
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०२३
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
आषाढ़-श्रावण-अधिक श्रावण, वि.सं. २०८०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US $ 200

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस 'गुरुभक्ति कथामृत विशेषांक' में...

❖ साधना-प्रकाश ✻ गुरुपूनम पर साधकों के लिए नया पाठ ४
❖ संपादकीय ✻ आओ करें कथा-अमृत का पान ५
❖ गुरुभक्ति रसधारा
✻ गुरु के प्रति प्रेम व समर्पण के आदर्श : पूज्य बापूजी ६
❖ सद्गुरु के प्रति समर्पण अथाह, बने शाहों के शाह ! ९
❖ अनमोल कुंजियाँ ✻ पारिवारिक शांति हेतु करें यह प्रयोग १०
✻ सदा के लिए अन्न की कमी मिटाने हेतु १०
✻ व्यवसाय में सफलता हेतु ✻ विघ्नरहित सुखमय यात्रा हेतु मंत्र १०
✻ इससे मनोरथ सफल होते हैं ३४
❖ दूरी को हर लेती है श्रद्धा ११
❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग
✻ मेरे सद्गुरु कृपानिधान, सिखाते व्यवहार में ऊँचा ज्ञान १२
❖ उपासना अमृत
✻ आयु, आरोग्य व पुण्य प्रदाता मास का ऐसे उठायें लाभ १४
❖ एकादशी माहात्म्य
✻ पद्मिनी एकादशी का माहात्म्य, विधि व कथा १५
❖ मुझे मेरा ईश्वर मिल गया १७
❖ विद्यार्थी संस्कार ✻ अलबेले बेला की निराली गुरुनिष्ठा १८
✻ ऐसे सँवरा मेरा बिगड़ा जीवन - उमेश कुमार १९
❖ गुरुनिष्ठा के आगे झुक गया हाथी २०
❖ सेवा संजीवनी
✻ ...मुझे व मेरे परिवार को पग-पग पर सँभाला - नंदा गुरनानी २१
❖ ऐसी मृत्यु तो साक्षात् मोक्ष है २२
❖ संस्कृति विज्ञान ✻ गुरु की पूजा का महत्त्व २४
❖ सँभलकर चलिये ! - स्वामी अखंडानंदजी २५
❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
❖ मंगलमय संदेश ✻ ...तभी अपनी पूर्णता का अनुभव होता है २७
❖ हारकर पायी बड़ी जीत २८
❖ सद्गुरु की युक्ति से मिली नरक से मुक्ति ३०
❖ स्वास्थ्य संजीवनी
✻ स्वास्थ्य में चार चाँद लगानेवाला अमृत समान जल ३२
✻ वर्षा ऋतु की स्वास्थ्य-समस्याओं में विशेष लाभकारी... ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

सेवाकार्य भी
Asharamji Bapu
Asharamji Ashram
Mangalmay Digital
आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

गुरु के प्रति प्रेम व समर्पण के आदर्श : पूज्य बापूजी

गुरुभक्ति रसधारा

ईश्वरप्राप्ति की ऐसी लगन, परमात्मा के प्रति ऐसा प्रेम और ऐसी तीव्र तड़प कि उसके लिए विभिन्न प्रकार की साधनाएँ कीं, तपस्या की, संस्कृत ग्रंथों का अध्ययन शुरू किया लेकिन जब सद्गुरु मिले तो कुछ ही दिनों में उनके अनुभव को अपना अनुभव बनाने में सफल हो गये... जानते हैं कौन ? जी हाँ, पूज्य संत श्री आशारामजी बापू, जिन्होंने भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज की कृपा से २३ वर्ष की अल्पायु में ही आत्मसाक्षात्कार का उच्चतम लक्ष्य प्राप्त कर लिया । हर कोई चाहता है कि हमें भी परमानंद, परम सुख की प्राप्ति हो और कम-से-कम समय में हो । तो आइये दृष्टि डालते हैं पूज्य बापूजी के साधनाकाल पर कि कैसे इतने कम समय में सद्गुरु की पूर्ण प्रसन्नता को प्राप्त करने में पूज्यश्री सफल हो गये ।

बापूजी के दिन-दिन बढ़ते विवेक-वैराग्य व प्रभुप्राप्ति की लालसा ने युवावस्था में ही उन्हें नैनीताल के जंगल में सद्गुरु साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के आश्रम में पहुँचाया ।

इस आश्रम के निकट एक मठाधीश, जो अपने चमत्कारों के कारण प्रसिद्ध था, का आश्रम था । पूज्यश्री से उसकी भेंट हुई । बापूजी का प्रभावशाली व्यक्तित्व व भगवत्प्राप्ति की तड़प देखकर वह बहुत प्रभावित हुआ । उसने पूज्यश्री का खूब आदर-सत्कार किया और भोजन भी कराया । बात-बात में जब भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का नाम निकला तो मठाधीश के चेहरे पर जरा-सी शिकन आयी और उसने महाराजश्री के लिए अपनी निम्न सोच से सिक्त वचन बोलना शुरू किया । बस, आप तुरंत वहाँ से उठे और चल दिये, पीछे मुड़ के नहीं देखा... न देखी उसकी सिद्धि न देखी प्रसिद्धि ! अपने गुरुदेव के प्रति कैसी अडिग श्रद्धा, एकनिष्ठा, वफादारी ! यही एकनिष्ठा पूज्य बापूजी के अनेकानेक शिष्यों के भी जीवन में झलकती है ।

भगवान शिवजी का पूजन आदि करने के बाद ही कुछ खाने-पीने का पूज्यश्री का नियम था । आप अपने साथ गुरु-आश्रम में पूजन-सामग्री लेकर गये थे । एक दिन शिवजी की प्रतिमा और पूजन की सामग्री एक गुरुभाई ने छिपा दी । फिर वही गुरुभाई मजाकिया लहजे में कहता है कि ''साँईं ! इसका भगवान चोरी हो गया है !'' तो साँईं लीलाशाहजी ने व्यंग्य कसते हुए कहा : ''भगवान की चोरी हो गयी ! वाह भाई वाह ! जो चोरी हो जाय ऐसा कैसा भगवान ?''

गुरुभाई का साथ देते हुए सद्गुरु भी ऐसा व्यंग्य कर रहे थे । कैसा होगा वह दृश्य, कल्पना कीजिये । लेकिन पूज्यश्री के हृदय में लेशमात्र भी फरियाद का भाव नहीं आया । यही है सत्शिष्य का हृदय !

साँईं लीलाशाहजी की वह लीला अपने शिष्य को आत्मशिव की ओर लाने की कितनी महती करुणा-कृपा सँजोये हुए थी ! और पूज्य बापूजी का आचरण हमें कल्याणकारी सीख देता है कि कभी सद्गुरु का व्यवहार बाहर से हमारे बुद्धिगत संस्कारों के विरुद्ध ही क्यों न दिखे लेकिन गुरुदेव

दूरी को हर लेती है श्रद्धा

– पूज्य बापूजी

रामायण में आता है :

श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई ।
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा ।

पूज्य बापूजी की मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी

श्रद्धा बिना धर्म नहीं होता । विश्वास के बिना सिद्धि नहीं होती है । श्रद्धा धर्म की उत्पत्ति करती है । श्रद्धा से धर्मलाभ होते-होते श्रद्धा इतनी प्रगाढ़ हो जाय कि वह विश्वास का रूप बन जाय ।

रामजी को वन गये ८ वर्ष बीत गये थे । एक प्रभात को माँ कौसल्या कहती हैं : ''राम ! उठो, देर हो गयी है ।''

कैकेयी, सुमित्रा आयीं, बोलीं : ''कौसल्याजी ! रामजी को गये ८ वर्ष हो गये, तुम रामजी को जगा रही हो ! क्या राम अभी यहीं हैं ?''

''हाँ, राम यहीं हैं, गये कहाँ हैं ? अभी मेरे सामने तो कक्ष में गये ।''

श्रद्धा दूरी को हर लेती है । श्रद्धा समय की खाई को पूरा कर देती है । श्रीकृष्णावतार को साढ़े चार हजार से भी अधिक वर्ष बीत गये थे परंतु मीरा को श्रद्धा के बल से श्रीकृष्ण नाचते हुए दिख जाते हैं । श्रद्धा में वह शक्ति है कि असम्भव को सम्भव कर दे, मिटनेवाले मन-बुद्धि को अमिट आत्मा में लाकर धर दे । यह श्रद्धा का ही प्रभाव है । श्रद्धेय के प्रति श्रद्धा बढ़ते-बढ़ते देश-काल की धारा से मन ऊपर उठ जाता है ।

मेरी माँ के जीवन में भी मैंने ऐसा सुना, देखा । मेरी माँ मुझे पुत्ररूप में नहीं वरन् भगवान के रूप में, गुरु के रूप में मानती थीं । आखिरी दिनों में माँ को सेविका हाथ पकड़कर चलाती थी लेकिन श्रद्धा के बल से एक रात्रि को २ बजे मेरे कमरे के द्वार पर माँ आ के खड़ी हो गयीं ।

सेविका ने देखा कि माँ उठी हैं तो पूछा : ''माँ ! कहाँ जा रही हो ?''

बोलीं : ''साँईं (बापूजी) चले न जायें, मैं दर्शन कर लूँ ।''

अब साँईं तो वहाँ थे नहीं परंतु माँ मानती थीं कि 'साँईं इसी कमरे में हैं ।'

मैं बोलता था : ''मैं सत्संग करके आता हूँ ।''

रोज आश्रम में जाता, सत्संग करके आ जाता था । मैंने आखिरी दिनों में देखा कि इनको सान्निध्य और दर्शन की बहुत भावना है तो इनके हृदय को चोट न लगे इसलिए मैं थोड़ा युक्ति से व्यवहार करता था ।

अहमदाबाद वाटिका की कुटिया से अहमदाबाद आश्रम में जाता तो बोलता : ''मैं सत्संग करने जाता हूँ ।'' और जब दिल्ली, कोलकाता या दूर-दूर जाता तब भी मैं ऐसा ही बोलने लगा कि ''सत्संग करने जाता हूँ ।''

तो माँ मानती थीं कि सत्संग करके आ गये, कमरे में हैं । माँ को ऐसा नहीं लगता था कि 'अभी मुंबई में हैं, अभी वाराणसी में हैं, अभी उधर हैं... ।'

माँ सेविका से बोलती थीं : ''साँईं तो इधर हैं फिर भी मिलते ही नहीं ! क्यों, नाराज हो गये क्या ?''

तो सेविका बोल देती थी : ''साँईं व्यस्त हैं न, इसीलिए, बाकी...''

''हाँ तो भले, भले...''

फिर कभी सेविका बोलती : ''अच्छा, तो लो ये साँईं सामने हैं ।'' ऐसा कह के वह टी.वी. खोल देती थी । उसमें मेरा सत्संग, हरिद्वार की यात्रा और माँ के साथ मंच पर चढ़े... वह सब

पद्मिनी एकादशी का माहात्म्य, विधि व कथा

– पूज्य बापूजी

श्रीकृष्ण के चरणों में युधिष्ठिर ने निवेदन किया : ''हे भगवन् ! पुरुषोत्तम मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी कौन-सी है और उसकी विधि क्या है ?''

श्रीकृष्ण ने कहा : ''युधिष्ठिर ! पुरुषोत्तम मास के शुक्ल पक्ष में कमला (पद्मिनी) एकादशी होती है । पद्मिनी एकादशी अनेक पुण्यों को देनेवाली है । इसके व्रत से भगवान पद्मनाभ प्रसन्न होते हैं, पाप नष्ट होते हैं और मनोवांछित फल प्राप्त होता है ।

पद्मिनी (कमला) एकादशी : २९ जुलाई

दशमी और एकादशी के दिन शहद आदि का उपयोग न करे । दशमी की रात्रि को हलका भोजन करना चाहिए, पराया अन्न नहीं लेना चाहिए । नीच कर्म का त्याग करे । हो सके तो धरती पर ही सादा बिस्तर लगाकर सोये । ज्यादा गद्दे-तकिये और विलास की जगह का त्याग करे । ब्रह्मचर्य का पालन करे । एकादशी को प्रातः उठकर संकल्प करे कि 'भगवान हरि में मेरी प्रीति हो, मेरा मनुष्य-जन्म सफल हो, मेरे पाप-ताप मिटें । यह एकादशी का व्रत सुसम्पन्न करने में भगवान मेरी सहायता करें ।'

हो सके तो स्नान के समय गंगा आदि तीर्थों की शुद्ध मिट्टी शरीर पर मलते हुए प्रार्थना करे : 'हे भूमि देवी ! हे जीवों पर कृपा बरसानेवाली धरती माता ! मेरे रोमकूपों को तू निर्दोष बना, आरोग्यता दे और मेरे चित्त को भक्ति प्रदान कर ।' फिर रगड़-रगड़कर नहाये । (मुलतानी मिट्टी★ अथवा अनाज के उबटन (सप्तधान्य उबटन★) आदि से नहाये तो वह भी अच्छा है । चरबीवाले साबुन का उपयोग न करे ।) नहा-धोकर भगवान की धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्पों आदि से पूजा करे, आरती करे फिर हर्ष मनाये, नाचे-गाये, जप करे ।''

हो सके तो उपवास निर्जल रहकर करे । अगर सामर्थ्य नहीं हो तो जल पिये परंतु ठंडा जल नहीं, ताजा गुनगुना जल, जिससे जठराग्नि प्रदीप्त रहे । ठंडे पेय पदार्थ और आइसक्रीम अभी तो मजा देते हैं किंतु बुढ़ापे में तौबा कराते हैं और जल्दी बूढ़ा बना देते हैं । इसलिए इन चस्कों से, चटोरेपन से अपने को बचाते रहना चाहिए । यदि कुछ खाये बिना न रहा जाय तो फल, दूध आदि थोड़ा-सा ले (फल, दूध एक समय पर न ले) और भगवत्कथाएँ (सत्संग) सुने, भगवत्सुमिरन, ध्यान आदि करे व मौन का आश्रय ले । भगवन्नाम का जप, कीर्तन करे और सब लोग मिलकर रात्रि का जागरण करें । लेकिन **इधर-उधर की बातें करके, कव्वालियाँ या फिल्मी गाने गा के जागरण करना यह विलासिता का ही एक प्रकार है, इससे जागरण का शास्त्रोक्त लाभ नहीं होता ।** चटोरेपन, गाने-बजाने... इन सबसे देवी-जागरण को लांछन न लगाये । शास्त्रोक्त विधि से एकादशी देवी के जागरण से अपना कल्याण करे ।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : ''युधिष्ठिर ! इस बात में जरा भी संदेह नहीं है कि विधिसहित व्रत करनेवाले के सारे पाप-ताप निवृत्त हो जाते हैं और

★ आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर उपलब्ध

विद्यार्थी संस्कार

अलबेले बेला की निराली गुरुनिष्ठा

गुरु गोविंदसिंहजी के एक शिष्य बेला ने उनसे निवेदन किया : ''गुरुजी ! मुझे कुछ सेवा दीजिये ।''

गोविंदसिंहजी ने पूछा : ''तू पढ़ा-लिखा है ?''

''नहीं गुरुजी ! मैं अनपढ़ हूँ ।''

''धनुष-बाण चलाना जानता है ?''

''नहीं गुरुजी ! नहीं जानता ।''

''अच्छा तो तुझे क्या आता है ?''

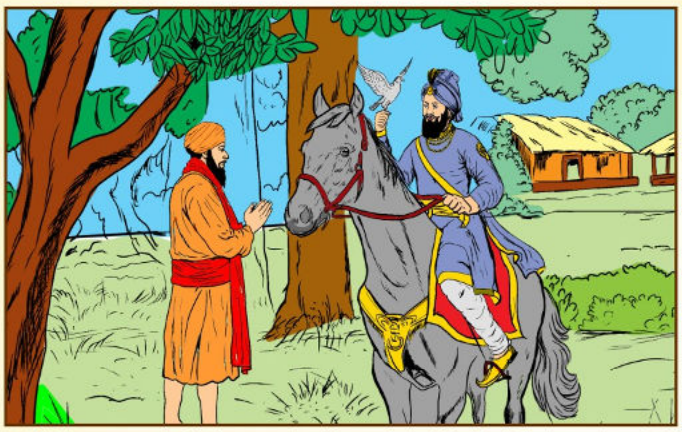

''गुरुजी ! मैं किसान हूँ, घोड़ों की अच्छी तरह देखभाल कर सकता हूँ ।''

गोविंदसिंहजी ने उसे अस्तबल में घोड़ों की सेवा दे दी और कहा : ''मैं प्रतिदिन तुझे याद करने के लिए 'जपुजी साहिब' की एक पंक्ति दूँगा, तू उसे दोहराते रहना ।''

बेला बड़ी तत्परता से सेवा करने लगा । गोविंदसिंहजी रोज उसे एक पंक्ति देते और वह दिनभर उसे बड़े प्रेम से गुनगुनाता रहता ।

एक दिन गोविंदसिंहजी घोड़े पर सवार हो के युद्ध के लिए जा रहे थे, इतने में वह आया, बोला : ''गुरुजी ! मुझे आज के लिए पंक्ति दे दीजिये ।''

गुरुजी विनोदभरे स्वर में बोले : ''वाह भाई बेला ! न पछाणे★ वक्त, न पछाणे वेला !'' और रवाना हो गये । बेला को लगा कि 'यही वह पंक्ति है जो गुरुजी ने उसे आज के लिए दी है ।' वह दिनभर उसे खूब निष्ठा से दोहराता रहा । बेला की सेवा में निष्ठा से गुरुजी का उस पर विशेष प्रेम था, जिससे कुछ शिष्य उससे जलते थे । वे उस पर व्यंग्य कसने लगे : ''गुरुजी ने तेरा उपहास किया था लेकिन तू कैसा मूर्ख है कि उसे गुरु-वचन समझ के तोते की नाईं रट रहा है ! तेरा दिमाग खराब हो गया है क्या ?'' वे उसकी खिल्ली उड़ाने लगे किंतु बेला पर उनके व्यर्थ प्रलाप का कोई असर नहीं पड़ा । वह तो पूर्ववत् अपने कार्य में लगा रहा ।

शाम को जब गोविंदसिंहजी लौटे और उसने उनको वह पंक्ति सुनायी तो वे बेला की गुरु-वचनों में दृढ़ निष्ठा देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए और उसे गले से लगा लिया ।

इस घटना से सज्जन शिष्य तो गद्गद हुए किंतु दम्भी, ईर्ष्यालु शिष्य फरियाद करने लगे : 'गुरुजी पक्षपाती हैं... वह तो अभी आया और उस पर इतना प्रेम !... हम कितने समय से सेवा कर रहे हैं परंतु हमें तो पूछते ही नहीं !...'

अंतर्यामी गुरुदेव ने शिष्यों को पाठ सिखाने के लिए लीला रची । एक दिन उन ईर्ष्यालु शिष्यों को बुलाकर कहा : ''तुम लोग भाँग बनाओ । कुछ लोग उससे कुल्ला करो, कुछ लोग उसे

★ पहचाने

गुरुनिष्ठ कल्याण ने कहा

ऐसी मृत्यु तो साक्षात् मोक्ष है

(पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से)

समर्थ रामदासजी अपने शिष्यों को परखने के लिए कई लीलाएँ करते थे । आत्मखजाना देना है तो परीक्षा तो करनी पड़ेगी न, किसके पास ठहरेगा ? राज्य दे देना बड़ी बात नहीं, ईश्वरीय शक्ति दे देना बड़ी बात होती है, बहुत सँभाल के देनी पड़ती है ।

शिष्य अम्बादास की तत्परता व गुरुनिष्ठा से प्रसन्न होकर समर्थ ने उसका नाम कल्याण रखा था । गुरुजी का उसके प्रति प्रेम देखकर दूसरे शिष्य ईर्ष्या करते थे ।

एक रात को समर्थ ने पान के पत्तों को एक डिब्बे में छुपा दिया । मध्यरात्रि थी, चेलों को जगाया : ''उठो ! उठो ! मेरे को पान-बीड़ा खाना है ।''

चेलों ने कहा : ''हाँ, आज हमको भी गुरुजी ने अपना माना है, अपनी निजी सेवा दी है । हम भाग्यशाली हैं ।''

वे पान-बीड़ा बनाने के लिए सब सामग्री कूटने-काटने लगे । एक चेले ने कहा : ''गुरुजी ! अन्य सामग्री तो तैयार हो गयी परंतु पान तो है नहीं ।''

समर्थ ने कहा : ''पान नहीं है तो क्या है, जंगल तो है न ! मेरे को पान खाना है, अभी जाओ, ले आओ ।''

''गुरुजी ! अभी अँधेरी रात है, सुबह आपकी इच्छा पूरी कर देंगे ।''

''सुबह तो सब जायेंगे, अभी हमारे चेले हमारे को एक पान नहीं खिला सकते ?''

''गुरुजी ! अभी तो मध्यरात्रि है, बस एक प्रहर के बाद हम आपके लिए पान ले आयेंगे ।''

''अच्छा, कल्याण कहाँ है ?''

समर्थ ने आवाज लगायी : ''कल्याण ! कल्याण !!...''

कल्याण : ''जी गुरुजी !''

''मुझे पान खाना है ।''

कल्याण पान लाने चल पड़ा ।

सबने कहा : ''कल्याण ! गुरुजी को तू बता दे कि पान अभी कहाँ लेने जायेंगे ? मसाला तैयार है, सुबह होते ही पान खिला देंगे ।''

कल्याण बोला : ''गुरुजी अभी माँग रहे हैं और सुबह होने की प्रतीक्षा करें ? नहीं, मैं तो यह चला !''

''तू अपनी जिंदगी का तो खयाल कर । इतना बड़ा जंगल है, वहाँ हिंसक प्राणी होंगे - साँप काट सकता है, शेर मार सकता है... । बैठ जा ! हम लोग सब एक तरफ हैं, तू काहे को ज्यादा होशियारी दिखाता है ?''

''तुम्हारी सीख मेरे को नहीं चाहिए, तुम्हारा ज्ञान तुम्हारे पास रखो ।''

कल्याण तो गया, समर्थ अपनी कुटिया में थे । अचानक चीख सुनाई दी । समर्थ उठ खड़े हुए कि 'यह चीख कल्याण की है ।' देखा कि चेले क्या कर रहे हैं ? वे आपस में बातें कर रहे थे कि 'देखो, इतने त्यागी-तपस्वी, भगवान के दर्शन

'ऋषि प्रसाद' के सम्मेलनों व अभियानों की झलकें

विद्यार्थी शिविरों से हो रहा बच्चों का जीवन-विकास

महिला उत्थान कार्यक्रमों द्वारा उन्नत हो रहा नारी-वर्ग

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन ऋषि प्रसाद व लोक कल्याण सेतु की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad Lok Kalyan Setu

हरड़ रसायन गोली

यह अपचित भोजन को पचानेवाला त्रिदोषशामक उत्तम रसायन योग है। इन्हें चूसने से भूख खुलती है। ये संचित कफ को नष्ट करती हैं।

स्वास्थ्य, शक्ति एवं विटामिन B12 वर्धक टॉनिक संजीवनी रस

✻ प्रकृति के सर्वोत्तम एंटी ऑक्सीडेंट और इम्यूनिटी बूस्टर गोझरण से निर्मित 'संजीवनी रस' एक सुमधुर व सुगंधित पेय है। ✻ १ लीटर संजीवनी रस लगभग ९ मि.ग्रा. सोना और ५ मि.ग्रा. चाँदी प्रदान करता है, जो शरीर के निर्माण, मस्तिष्क के पोषण और याददाश्त तथा बुद्धि बढ़ाने में मदद करते हैं। ✻ इसमें निहित शिलाजीत ह्यूमिक एसिड और फुल्विक एसिड का एक उत्तम स्रोत है, जो विषनाशक, एंटी ऑक्सीडेंट और स्फूर्तिदायक गुणों के लिए जाने जाते हैं। ✻ यह B12 सहित 'B ग्रुप' के अन्य विटामिन्स एवं कैल्शियम, सेलेनियम, आयरन एवं पोटैशियम आदि खनिजों का उत्तम स्रोत है। ✻ शरीर में से विषाक्त द्रव्यों को हटाकर शरीर को स्वस्थ रखने एवं बल बढ़ाने में सहायक है। ✻ मोटापा, रक्ताल्पता, यकृत-विकार, पथरी, एड्स आदि अनेक समस्याओं से राहत के साथ यह कैंसर, हार्ट ब्लॉकेज, लकवा आदि गम्भीर रोगों से सुरक्षा में सहायक है।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

आध्यात्मिक मासिक विडियो मैगजीन

ऋषि दर्शन

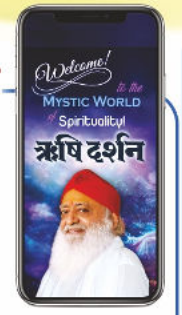

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st July 2023

यह आप तक पहुँचाती है -

✻ दुःख, शोक, टेंशन को दूर कर रसमय जीवन देनेवाला दुर्लभ सत्संग ✻ संस्कृति व शास्त्रों का ज्ञान, वेदांत का अनमोल प्रसाद ✻ हँसते-खेलते भगवद्रस का पान करानेवाले भजन, कीर्तन, कथाएँ ✻ पर्व-त्यौहारों की विधि, महिमा व पुण्यदायी तिथियाँ ✻ घर-गृहस्थी संबंधी समस्याओं का मार्गदर्शन ✻ विद्यार्थियों को सुसंस्कार-सम्पन्न व सफल बनाने की युक्तियाँ ✻ ऋतु-अनुरूप आहार-विहार व स्वस्थ रहने के उपाय, योगासन व यौगिक प्रयोग।

सदस्यता शुल्क : वार्षिक – ₹ १२०, द्विवार्षिक – ₹ २४०, पंचवार्षिक – ₹ ५००

सदस्यता हेतु स्कैन करें :

जुलाई अंक के आकर्षण

✻ ध्यान-भजन के बाद भी क्यों जरूरी है चित्त की विश्रांति ? वह कैसे पायें ? ✻ संत दादू दयालजी व संत उग्रानंदजी के प्रेरक कथा-प्रसंग
✻ कैसे हो मनुष्य-जीवन के ऐहिक और मुख्य कर्तव्य की पूर्ति ?
✻ स्वस्थ, सुंदर व सुसंस्कारी संतानप्राप्ति हेतु मार्गदर्शन।

सदस्य बनने हेतु डाउनलोड (Google Play) करें : Rishi Darshan APP सम्पर्क : ९८९८२२०६६६, (०७९) ६१२१०७७७/८८८ visit: www.rishidarshan.org

Asharamji Bapu यूट्यूब चैनल के कुछ मनभावन विडियोज

(देखने हेतु नाम से सर्च करें या स्कैन करें)

- क्या किया है संत आशारामजी बापू ने ?
- ऐ मेरे सद्गुरु प्यारे... तेरे तन-मन-धन की तपस्या, तेरे जीवन की कुर्बानी
- ६ महीने में साधक बन जायेगा सिद्ध। बिना मेहनत स्वाभाविक ब्रह्मज्ञान की साधना
- चतुर्मास की संपूर्ण जानकारी। व्रत, विधि, नियम
- २० सूत्री साधना - शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कंगालियत से बचानेवाली
- केवल Five Minute इस तरह करें गुरुमंत्र का जप, फिर आपके जीवन में कोई भी शिकायत नहीं रहेगी
- कहीं भी नहीं मिलेगा ऐसा दिव्य ज्ञान। तात्त्विक सत्संग
- घर में अलौकिक शांति और आनंद लायेगा यह दिव्य ॐकार संकीर्तन
- श्रावण मास विशेष। भाग-दौड़ भरी जिंदगी में भी पायें परमानेंट शांति का अहसास इस MASTER KEY से
- सोऽहम् का अलौकिक प्रसाद। ध्यान-संकीर्तन
- ध्यान की मस्ती। सुनते सुनते डूबें गहरे ध्यान में...
- Hare Ram... Hare Krishna... Flute Instrumental Music

इस प्रकार के अनेकों विडियोज देखने के लिए Sant Shri Asharamji Bapu चैनल को अवश्य Subscribe करें - youtube.com/asharamjibapu

Sant Shri Asharamji Bapu के करीब १ मिनट के short विडियोज के लिए इस चैनल को अवश्य Subscribe करें - youtube.com/@asharamjibapushorts

विभिन्न भाषाओं में चैनल्स के लिए इस लिंक को विजिट कर अपनी भाषा के चैनल्स को Subscribe करें - youtube.com/@AsharamJiBapu/channels

पूज्य बापूजी के २०० से अधिक घंटों के अत्यंत दुर्लभ सत्संग व ध्यान के विडियोज के लिए इस चैनल को JOIN करें - youtube.com/asharamjibapu/join

साथ ही भेंट में पायें ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता

आश्रम की सेवा-गतिविधियों व वक्ताओं के सत्संग तथा त्रिकाल संध्या के सीधे प्रसारण के लिए Sant Shri Asharamji Ashram चैनल को अवश्य Subscribe करें - youtube.com/asharamjiashram

उपरोक्त चैनल्स के नोटिफिकेशन्स आइकॉन को भी अवश्य क्लिक करें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी